घुमंतू बंजारा समाज की संस्कृति

प्रा.डॉ. महावीर रामजी हाके
असोशिएट प्रोफेसर, हिंदी विभाग
कला, वाणिज्य एवं विज्ञान महाविद्यालय,
गंगाखेड जि. परभणी
मो.9423143835
ईमेल:- mrhake67@gmail.com

सारंश

बंजारा जाति में तांडे का नायक ही सही दृष्टि में न्यायाधीश होता है। नायक ही संरक्षक भी होता है। तांडे की उचित अनुचित घटना का पूरा दायित्व नायक पर ही होता है। नायक निष्पक्ष भाव से न्याय करता है। न्यायदान के समय यदि सगा भाई अथवा बेटा दोषी हो तो, उसे भी सजा दी जाती है। वह सजा उसे भूगतनी ही पडती है। अन्यथा उसे तांडे से बहिष्कृत करने का भी पूरा अधिकार नायक को होता है।

बीज शब्द- बंजारा, जनजाति, पंचायत।

प्रस्तवना

हमारे देश में बंजारा जनजाति की संख्या काफी मात्रा मे है जो घुमन्तु अवस्था में स्थान स्थान पर गाँव या पहाडों के निकट स्थिर हो चुकी है। इन समस्त बंजारो के विविध तांडो का सर्वेक्षण करके लोकगीतों का संकलन करने का सफल प्रयत्न किया गया है। लोकगीतों के माध्यम से बंजारा जनजाति का जीवन एवं संस्कृति को चित्रित करने का प्रयास किया गया है। लोकगीत ही जीवन का महत्वपूर्ण अंग होने के कारण समस्त जीवन का दर्शन किया गया है। लोकगीत खेतों, परिवारों, खलिहानों में सहजता से प्रवाहित होते है। तथा उत्सव , व्रत, त्योहार आदिस्थानों पर स्त्रियों एवं पुरूष नृत्यगान करते है। जिसमें संगीत के साधन के रुप में डफ का उपयोग किया जाता है। रात्रि के समय जब तांडे में भजन का कार्यक्रम संपन्न होता है उस वक्त संगीत साधन के रुप में नगाडा, थाली और झांजरियों का उपयोग किया जाता है।

घुमन्तु जातियों मे **'बंजारा'** बोली का समावेश किया जाता है। बंजारा को लमाण-लमाणी आदि नामों से भी जाना जाता है।

उत्पत्ति :- बंजारा लोग भारतवर्ष में अपनी अलग पहचान के साथ फैले हुए हैं। भारत के मूल संस्कृत शब्द **'लमण'** के लवण, लभान, लमान आदि भिन्न शब्द रुप है। लमाणी अथवा , बंजारी लोग बैल की पीठ पर लवण (नमक) की बोरियाँ डालकर देश-विदेश भ्रमण करते थे। अतएव उन्हेः लवण का व्यापार करने वाले लमाणी कहा गया है।

बंजारा शब्द से खैर संचार करना, यह भी अर्थ ध्वनित होता है। भारत के कुछ प्रान्तों में बंजारों को अनुसूचित जाति में और महाराष्ट्र में उन्हे विमूक्त जाति में समाविष्ठ कर लिया गया है। कुछ लोग **वन** में जाकर रहने लगे है। इस **'वन'** से भी शायद **'बनजारा' 'बंजारा'** शब्द बना होगा।

मराठी विश्वकोश में लिखा है "**महाराष्ट्र के कुछ जिलों में उन्हें बंजारी, बनजार, लमाण आदि नामों से पहचाना जाता हैं। वाणिज्य अथवा** वणज **इन शब्दों पर से बंजारा-बनजार और लवण (नमक) की बोरियों का लेनदेन करने वाले लोग** लमाणी **कहलाने लगे।**"[1]

अत: बंजारा अथवा लमाणी शब्दों के साथ भ्रमन्ती और वाणिज्य वृत्ति जुडी हुई है, बंजारो का घूमना यह स्थायीभाव समझना होगा।

मूल स्थान:- बंजारा लोगों के मूलस्थान के सम्बंध में अब तक विद्वानो एकमत नहीं है। में स्थूल रूप से कहा जाता हैं कि वे मुल राजस्थान के वे खुद को महाराणा प्रताप के वंशज भी कहते है। राजस्थान में मध्यप्रदेश, आंध्रप्रदेश, महाराष्ट्र में आए होंगे। उन्हे अलग-अलग प्रान्तों में भिन्न-भिन्न नामों से संबोधित किया जाता है। मराठी विश्वकोश में लिखा है कि : "**बंजारा लोगों को आन्ध्रप्रदेश में सुगाली, दिल्ली में शिरकीवन , राजस्थान-केरल में गवरिया और गुजरात में चारण नाम से पुकारा जाता है।"** [2]

बंजारा समाज में जो खुद को उच्च जाति का समझते है, वे राठोड, पवार, जाधव, आडे, चव्हाण आदि उपनामों से प्रसिध्द है। निम्न जातियों मे दाढी अथवा ढालियाँ जाति के लोगों का समावेश है।

व्यवसाय :- बंजारा लोगों का पहले प्रमुख व्यवसाय नमक का आयात निर्यात करना था। किन्तु बाद में काफी परिवर्तन हुआ। अब बंजारा गाँव के बाहर दूर '**तांडा**' बनाकर रहतें है। बंजारा लोग गाय, बैल, भैंस, बकरी आदि जानवरों का पालन करते हैं। बंजारा लोग जानवरों की देखभाल प्राणों से भी ज्यादा करतें है। बंजारा की गाय अथवा लमाणी का बैल तुरंत पहचाना जाता है। वे रात दिन जानवरों की सेवा में लगे रहते है। वे दूध, घी आदि की भी शहरों में जाकर विक्री करते हैं। वे गोणपाट , ताग आदि की डोरियाँ, थैलिया बनाकर बेचते थे। '**बंजारा**' लोगो में मनुष्य के प्रति सेवा भावना होती है। इस सम्बंध की एक घटना का उल्लेख करते हुए डॉ. भीमराव पिंगले लिखते हैं-

"सन **1396 से सन 1408 के बीच भारत में बडा भयानक अकाल पडा था। बहुत से लोग रोटी के बिना मर रहे थे। उस समय बंजारा लोगों मे बैलों पर चीन, ब्रम्हदेश, तिब्बत , ईरान आदि देशों में से अनाज लाकर लोगों की प्राण रक्षा की थी। कुछ तांडा नायकों का यह कथन है।"** [3]

इस कथन से यह प्रमाणित होता है की, बंजारा लोग कठिन स्थिति में भी नही डरते सेवाधर्म को सही धर्म मानते हैं।

वेशभूषा एवं अलंकरण : 'बंजारा' समाज में पुरूषों की वेशभूषा आम आदमी की तरह शर्ट (बाराबंडी) , धोती (दोन) पटका, जोडा और कमर पर '**पारा**' नामक धातु बाँधते हैं। विशेष बात यह है कि हर आदमी को सिर के बाल कम किन्तु चोटी लम्बी रचना आवश्यक है।

बंजारा महिलाओं की पोशाक एक खास विशेषता समझी जाती है। भारत के किसी भी कोने में '**बंजारा**' महिला उसकी पोशाक से तुरंत पहचानी जा सकती है। महिलाओं की पोशाक लहँगा, चोली (काँच की) फडकी (चूनरी) होती है। वे उसमें केश को गोंडे लगाती है। कहा जाता है कि अपने पति के नाम से बंजारिन अपने केशों को सजाती है। पुरूष के साथ महिलाए भी श्रम करती है। बंजारा महिलाएँ साहसी, परंपरा प्रिय होती है। कुछ बंजारा महिलाओं के सिर पर '**सींग**' नामक गहना रहता है जिस पर उनकी चुनरी शोभायमान होती है। इस सम्बन्ध में डॉ. धर्मराज सिंह लिखते है- "**पोशाक एवं आभूषण मानव प्रकृति के प्रत्यक्ष पक्ष है। आदिम जनजाति की वेशभूषा एवं अलंकार उनके व्यक्तित्व को विशिष्ट गरिमा प्रदान करतें है।"** [4] बंजारा लोगों की संगीत, नृत्य में भी विशेष रुचि होती है। उनमें नगारा, साँप, मोर आदि नृत्य के प्रकार लोकप्रिय है।

विवाह पध्दती :- बंजारा जातियों में विवाह के समय तांडे के नायक को प्रमुख स्थान दिया जाता है। लडका लडकी परस्पर पसंद होने के बाद वरपक्ष की ओर से पाँच छ: आदमी नायक के साथ वधु पक्ष के पास जाते है। वधू पक्ष को '**देज**' (दहेज) के रुप में चार बैल देने पडते हैं। वरपक्ष की ओर से वधू को गहने के रुप में नथ, पैजम, बिलवर , मंगलसूत्र , कमरपट्टा आदि देने पडते हैं। कही कही वधू पिता को दहेज के रुप में पाँच सौ रुपये भी देने पडते हैं। किन्तु आजकल यह प्रथा बंद होती जा रही है और अब वधू पक्ष को ही दहेज के रुप में हजारों रुपये देने पड रहें हैं। यदि लडका पढा-लिखा है, तो दहेज और बढा-चढाकर देना पडता है। बंजारा जातियों में तलाक की पध्दति है। जात पंचायत के सम्मुख पति अथवा पत्नी को तलाक देनी पडती हैं। पहले पंच पति-पत्नी को समझाते है, सहमति न होने पर तलाक के लिए मंजूरी देते हैं।

बंजारा समाज में अनैतिक बर्ताव करने पर पुरूष और महिला को दण्ड देना पडता है। श्री. उत्तम कांबले के अनुसार - **"किसी युवक अथवा युवती ने यदि अनैतिक बर्ताव किया है। तो पंचायत उन्हे जाति-बहिष्कृत करती है।. यदि फिर जाति में उन्हे आना हो तो पंच के कहने पर दावत-शराब और चार हजार रुपये दण्ड देना पडता है। दण्ड की रक्कम बाद में पंच के सदस्य बाँट लेते हैं"** [5] पंचायत द्वारा अनैतिक व्यवहार के लिए दण्ड लेकर अपराधियों को फिर जाति में समाविष्ट करना आदि प्रथाएँ उत्तम हैं।

देवी-देवता तथा त्यौहार :- बंजारा जाति के लोग हिन्दु धर्म के त्यौहार हिंन्दू समझकर मनाते हैं। उसमें विशेष रुप से होली का त्यौहार मजे के साथ बंजारा पुरूष-महिलाएँ गाना-गाते, खेल-खेलते हुए मनाते हैं। हिंदू धर्म के अन्य त्यौहार दीपावली-दशहरा भी बंजारा लोग घूमघाम से तांडे पर एक साथ मनाते हैं। बंजारा लोग जगदम्बा के भक्त या पुजारी कहलाए जाते हैं। दशहरे के दिन बकरे की बलि देने की भी प्रथा हैं।

परमेश्वर, देवी-देवताओं एवं धर्मगुरू आदि पर बंजारा लोगों को दृढ विश्वास हैं। वे देवी-देवताओं को प्रसन्न करने के लिए बकरे की बलि देना जरुरी समझते है। बंजारा समाज में महात्मा सेवालाल महाराज, संत रामाराव महाराज जैसे सत्पुरूष हुए हैं। जिनको सारे बंजारा लोग अपने गुरू कहकर पुकारते है। उनके नाम से रोजाना भजन पूजन करते हैं।

न्याय पंचायत :- बंजारा जाति में तांडे का नायक ही सही दृष्टि में न्यायाधीश होता है। नायक ही संरक्षक भी होता है। तांडे की उचित अनुचित घटना का पूरा दायित्व नायक पर ही होता है। नायक निष्पक्ष भाव से न्याय करता है। न्यायदान के समय यदि सगा भाई अथवा बेटा दोषी हो तो, उसे भी सजा दी जाती है। वह सजा उसे भूगतनी ही पडती है। अन्यथा उसे तांडे से बहिष्कृत करने का भी पूरा अधिकार नायक को होता है।

कभी-कभी नायक तांडे के जेष्ठ व्यक्ति के अनुभव का भी लाभ उठा सकता है। अनुभवी व्यक्ति के शब्दों को नायक प्रमाण मानकर **'न्याय'** की घोषणा करता है। बंजारा लोग समझते हैं कि न्याय का मतलब केवल सजा दण्ड ही नहीं है अपितु अपराधी को सुधरने का मनुष्य बनने का अवसर देना भी है।

मृतक संस्कार :- बंजारा जाति में मृतक संस्कार हिंदू धर्म के अनुसार ही होता है। आदमी की मृत्यू होने के बाद अग्नि स्पर्श से अंत्यविधी होती है। मृतक आदमी के तेरह दिन के बाद सभी को भोजन दिया जाता है। इसमे कही कही पर मद्य माँस का आयोजन भी किया जाता है। बंजारा लोगों की श्रध्दा है कि परमेश्वर सबका भला करता है। संकटो को दुर करने वाला एकमात्र भगवान और गुरू सेवालाल है।

निष्कर्ष :- बंजारा जाति के सम्बंध में उपरोक्त तथ्यों से जानकारी होने के बाद इस जाति के सन्दर्भ में नये प्रश्न उभर कर आते है। डॉ. रुक्मिणी पवार कहती है कि, **"बंजारा लोगों की विभिन्न प्रथाओंका पुनराध्ययन होना जरुरी है। उनकी प्रथाओं के पीछे नए संदर्भ प्रतीत होते हैं।"** [6]

बंजारा लोगों की बोली भाषा **'गोलमाटी'** है। इस पर राजस्थानी हिन्दी, मराठी का प्रभाव होने के बावजूद भी इसमें कुछ और ही मधुरता प्रतीत होती है। जीवन को समृध्द करने में **'बोली'** का स्थान अनन्य होता है। इस पार्श्वभुमिपर इसका ज्ञान होना अनिवार्य है।

संदर्भ :-

1) मराठी विश्वकोश-खण्ड-10, संपादक -लक्ष्मणशास्त्री जोशी , पृ.1215
2) वही पृ. 1215
3) वनवासी व उपेक्षित जग : डॉ. भीमराव पिंगले , पृ-311
4) अरूणाचल की आदि जनजाति का अध्ययन डॉ. धर्मराज सिंह-पृ-48
5) भटक्यांचे लग्न - उत्तम कांबळे, पृष्ठ-23
6) दैनिक लोकपत्र- सौरभ , पृ-01.